जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

॥ माह – जून 2022 ॥ अंक – 23 ॥ केवल आंतरिक वितरण हेतु॥

अन्दर के पृष्ठों में...

नई उम्मीद बनी
जीविका महिला
कृषि उत्पादक कम्पनी
(पृष्ठ – 02)

कम मेहनत से
मिला ज्यादा लाभ
(पृष्ठ – 03)

किचेन गार्डन से
लाभ ही लाभ
(पृष्ठ – 04)

घर की चहारदीवारी से निकलकर संभाली कंपनी की कमान

जीविका ने स्वरोजगार के क्षेत्र में कार्य करते हुए दीदियों को बिचौलियों से मुक्ति एवं उनके उत्पादों की उचित कीमत दिलाने के लिए उत्पादक कंपनियों का गठन किया है। कंपनियों का संचालन पूरी तरह जीविका दीदियों के हाथों में है। राज्य के विभिन्न जिलों में कुल 11 उत्पादक कंपनियां सफलतापूर्वक संचालित हैं। कंपनियों का मुख्य उद्देश्य दीदियों को उत्पादक समूह के माध्यम से संगठित कर उनका क्षमतावर्द्धन करना और उन्हें उनके उत्पाद के प्रबंधन एवं विपणन के लिए पूरी तरह दक्ष बनाना है।

जीविका ने वर्ष 2009 में पूर्णिया में अरण्यक फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी एवं खगड़िया में महिला फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी की शुरुआत की। इन दोनों कंपनियों की सफलता के बाद वर्ष 2013 में सहयोग फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी, नालंदा एवं समर्पण प्रोड्यूसर कंपनी, मुजफ्फरपुर का संचालन प्रारंभ किया गया। इसके बाद वर्ष 2018 में पूर्वी चंपारण में संपोषित, वैशाली में नारी अनंत, समस्तीपुर में श्रेष्ठ एवं सहरसा में सहरसा फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी की शुरुआत की गयी। कंपनियों की यात्रा वर्ष 2019 में बेगूसराय के धान्यक, भोजपुर के समहूत तथा वर्ष 2020 में किशनगंज में महानंदा टी फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी तक जारी है।

जीविका दीदियों के स्वामित्व वाली तथा इनके द्वारा संचालित यह कंपनियां अलग –अलग क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादों के लिए कार्य कर रही है। पूर्णिया, खगड़िया और सहरसा की कंपिनयों द्वारा मक्का के व्यवसाय का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। वहीं मुजफ्फरपुर की कंपनी शाही लीची का कारोबार कर रही है। किचन गार्डन के क्षेत्र में मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण, समस्तीपुर, बेगूसराय और वैशाली स्थित कंपनियों द्वारा कार्य किया जा रहा है।

इसी तरह नालंदा और पूर्वी चंपारण में गठित कंपनी आलू, मुजफ्फरपुर और खगड़िया की कंपनी आम, समस्तीपुर की कंपनी हल्दी का व्यवसाय कर रही है। वहीं पूर्णिया की कंपनी द्वारा पोल्ट्री फीड्स का उत्पादन और विपणन का कार्य भी किया जा रहा है।

जीविका द्वारा इस तरह की उत्पादक कंपनियों का गठन कर दीदियों को इससे जोड़ा जा रहा है। इससे दीदियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को उचित कीमत मिल रही है साथ ही कंपनियों के मुनाफे का भी अंश उन्हें प्राप्त हो रहा है। विभिन्न प्रकार की उत्पादक कंपनियों का गठन और उसका सफलतापूर्वक संचालन कर जीविका दीदियों ने एक मिसाल कायम की है। कंपनियों का सफलतापूर्वक प्रबंधन करते हुए उन्होंने यह साबित किया है कि गांव की महिलाएं घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर हर क्षेत्र में अनूठे कार्य कर सकती है। सही मायने में जीविका दीदियों ने कंपनियों का संचालन कर महिला सशक्तीकरण को एक नया आयाम दिया है।

महिला किसानों के उत्पादों को मिला उचित मूल्य

जीविका से जुड़ी महिला किसानों को संगठित कर 25 नबंवर 2009 को अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, पूर्णियाँ का पंजीकरण कंपनी अधिनियम, 2002 के तहत कराया गया। तभी से पूर्णियाँ में जीविका द्वारा स्वयं सहायता समूहों से जुड़े महिला किसानों को अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी के माध्यम से उचित मूल्य पर बीज एवं खाद उपलब्ध करवाकर तथा उत्पादित सामग्री का उचित मूल्य दिलवाकर उनकी आय बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इस कंपनी के 5753 शेयर धारक हैं। सभी शेयर धारक जीविका समूह से जुड़ी हैं।

वर्ष 2015 में अरण्यक एग्री प्रोड्यूसर कंपनी द्वारा मक्का का व्यवसाय शुरु किया गया। मक्का की खरीद पारदर्शी ट्रेडिंग मानदंडों और ससमय पर भुगतान सुनिश्चित करने वाले इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म एन॰सी॰डी॰ई॰एक्स॰ पर व्यापार शुरु किया गया। वित्तीय वर्ष 2015–16 में कंपनी द्वारा 10 उत्पादक समूहों की 299 दीदियों से 1,014 मैट्रिक टन मक्के की खरीददारी की गई। इन मक्के को बेचने से कंपनी को कुल 10,38,756 रुपये का मुनाफा हुआ। इसमें से 6,53,902 रुपये बोनस के रुप में कंपनी को मक्का बेचने वाली दीदियों को दिया गया। वित्तीय वर्ष 2016 से 2022 तक कुल 29471 मैट्रिक टन मक्के की खरीद–बिकी कर 37.57 करोड़ रुपए का कारोबार किया गया।

पूर्णिया में केला और मखाना के बेहतर उत्पादन को देखते हुए कंपनी द्वारा वित्तीय वर्ष 2020–21 में धमदाहा एवं बड़हरा कोठी प्रखंड मे 5 केला उत्पादक समूहों की 74 किसान दीदियों की मदद से 105 एकड़ जमीन में 1,05,000 जी–9 प्रजाति के केला की खेती की जा रही है। जीविका दीदियों द्वारा उत्पादित मखानों का पैकेजिंग कर बाजार में एवं फ्लिपकार्ट के माध्यम से बेचकर अधिक मुनाफा दिलाया जा रहा है। कंपनी को वित्तीय वर्ष 2014–15 में कृषि विभाग से इनपुट लाइसेंस मिलने से किसान दीदियों को आसानी से उचित मूल्य पर गुणवतायुक्त बीज एवं खाद उपलब्ध हो रहा है। वहीं वित्तीय वर्ष 2018–19 से मुर्गी पालन करने वाली दीदियों को कंपनी के माध्यम से पॉल्ट्री फीड भी उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाया जा रहा है।

नई उम्मीद बनी जीविका महिला कृषि उत्पादक कम्पनी

खगड़िया जिला में महिला जीविका कृषि उत्पादक कंपनी की स्थापना 25 नवम्बर 2009 को हुई। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को व्यापारिक गतिविधियों में शामिल करना था। एक दौर था, जब किसानों को खाद एवं बीज की कमी के कारण काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। बीज एवं खाद उपलब्ध नही होने के कारण किसानों के फसल की उत्पादन क्षमता प्रभावित होती थी। इन सारी समस्याओं को दूर करने के लिए जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनी की स्थापना की गयी। महिला कृषि उत्पादक कंपनी में 10 रूपये प्रति शेयर के हिसाब से 20 से 50 शेयर दीदियों द्वारा खरीदा गया है। उत्पादक कम्पनी जिले के सातों प्रखंडों से 1461 दीदियां शेयर होल्डर के रूप में जुडी हैं। कम्पनी के निदेशक मंडल (BOD) में सात महिला सदस्य जुडी हैं जो व्यवसायिक निर्णय लेती हैं। कंपनी द्वारा स्थानीय स्तर पर संचालित 37 कृषि उत्पादक समूहों के माध्यम से खरीदारी का कार्य किया जाता है।

2009 से 2015 तक कम्पनी द्वारा सिर्फ खाद,बीज, बर्मी कम्पोस्ट एवं किचन गार्डन किट बनाने एवं बेचने का कार्य किया गया। इसके साथ बीज उत्पादन गतिविधि द्वारा गेहूं और मुंग के बीज का उत्पादन भी किया गया। इसके बाद वर्ष 2015 में कंपनी द्वारा 500 टन मक्का व्यवसाय का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस लक्ष्य के विरूद्व कंपनी द्वारा 1000 टन मक्का का व्यवसाय किया गया। इसके बाद कम्पनी मेंथा तेल, गेंहू, आम और धान आदि के व्यवसाय से भी जुड़ गयी। वर्तमान में कम्पनी 6500 किसानों के साथ कार्य कर रही है और इसका कुल कारोबार 12 करोड़ से अधिक है।

वितीय वर्ष 2021–22 में कम्पनी द्वारा जिले के चौथम प्रखंड में इनपुट सेंटर द्वारा किसानो को खाद एवं बीज उनके घर पर उपलब्ध कराया गया। इससे जहां किसानों को मनमाने कीमत से राहत मिली, वहीं उपज का सीधा लाभ भी उन्हें मिला। कम्पनी पैक किए गए अनाज ''ग्रीन डिलाइट शॉप'' में भी बिक्री कर रही है। किसानों एवं उद्यमियों के सशक्तीकरण की दिशा में जीविका महिला कृषि उत्पादक कम्पनी बेहतर तरीके से कार्य कर रही है।

किचेन गार्डेन ने बदली गाँव की तस्वीर

एक ऐसा गाँव जहाँ हरियाली भी है, स्वच्छता भी है और आर्थिक सशक्तीकरण भी। बक्सर जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर महदह पंचायत का एक गाँव है एकदेढ़वा। 200 घरों का यह गाँव आज जिले में मॉडल गाँव के रूप में जाना जाता है। वजह है किचेन गार्डेन के तहत हर घर में पपीता, केला, अमरुद के साथ ही सभी प्रकार के सब्जियों की खेती का कार्य। जीविकोपार्जन के इस विधा से ग्रामीणों की आमदनी दोगुनी–तिगुनी हुई है। खुद के घर के आगे, आंगन में या पिछवाड़े फल एवं साग–सब्जियों का उत्पादन करते हुए जीविका दीदियाँ अपने घरों में फल और सब्जी की मांग को पूरा कर ही रही हैं, वहीं खुले बाज़ार में भी बिक्री कर प्रति दिन तीन से चार सौ रूपया मुनाफा भी कमा रही हैं। अब उन्हें फल एवं सब्जी खरीदने के लिए गाँव से बाहर नहीं जाना पड़ता है। मुनाफा और बचत के साथ ही ताज़ा, शुद्ध एवं पौष्टिक फल एवं सब्जी घर पर ही उपलब्ध है। गाँव के प्रत्येक घर की महिला स्वयं सहायता समूह से जुडी हैं। गाँव में कुल 9 स्वयं सहायता समूह हैं। सभी समूह कौशल जीविका महिला ग्राम संगठन से संबंद्ध हैं।

ग्राम संगठन की अध्यक्ष ममता देवी बताती हैं कि–'समूह से जुडी महिलाएं एकजूट होकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान चलाने के साथ ही गाँव में हरियाली भी ला रही हैं। किचेन गार्डेन कि सफलता एवं उससे हो रही बेहतर उपज को देखते हुए गाँव में वाटिका जीविका महिला उत्पादक समूह का गठन मई 22 में किया गया है। एकदेढ़वा गाँव के हर घर में किचेन गार्डेन एवं शौचालय की उपलब्धता अन्य गाँव और समाज के लिए नजीर पेश कर रहा है।

कम मेहनत से मिला ज्यादा लाभ

सुपौल जिले के छातापुर प्रखंड स्थित चकला गांव की रहने वाली गीता देवी अपने दैनिक खान–पान में पर्याप्त मात्रा में हरी साग–सब्जियों और फलों को शामिल करती हैं। इससे उनका एवं उनके परिवार का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। महंगाई के इस दौर में जहां एक साधारण परिवार के लिए हरी सब्जियों एवं फलों का सेवन कर पाना मुश्किल है, वहीं गीता देवी के लिए यह काफी आसान है। दरअसल पौष्टिक खान–पान के लिए गीता बाजार पर निर्भर नहीं है बल्कि अपने घर में ही किचन गार्डेन के माध्यम से पर्याप्त मात्रा में फल एवं सब्जियों का उत्पादन कर रही हैं। उनके घर के पीछे खाली पड़े छोटे से हिस्से में कई प्रकार की सब्जियों की लताएं, साग एवं फल के पेड़ लगे हैं। इससे रोजाना जरूरत के योग्य सब्जियां मिल जाती है। ऐसे में उसे बाजार से महंगी सब्जियां खरीदने की जरूरत नहीं होती है।

बहरहाल गीता देवी पहले भी अपने घर के पीछे वाली जमीन पर सब्जियों की लता लगाती थीं। लेकिन इससे पर्याप्त उपज नहीं हो पाती थी। ऐसे में उसे अपनी जरूरत के अनुरूप सब्जियों के लिए बाजार पर ही निर्भर रहना पड़ता था। वहीं जब से उसने जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर किचन गार्डनिंग की तकनीक के बारे में जाना है, तब से उनके घर में सब्जियों की किल्लत नहीं रहती है। वह अपनी जमीन के छोटे से टुकड़े में आधुनिक विधि से सभी प्रकार की सब्जियों की खेती कर लेती हैं। साथ ही किनारे में आम, अमरूद, केला आदि फलों के भी पेड़ लगे हैं। वह मचान विधि से सब्जियों की खेती करती हैं, इससे अधिक उपज होती है। इसके अलावा बीच में मक्का, भिंडी आदि के पौधे लगाए गए हैं। वह बताती है कि उन्नत विधि से खेती करने से ही जमीन के छोटे से हिस्से में अधिक पैदावार होने लगी है। जिससे वह अपने घर की जरूरतें पूरी करने में सक्षम हुई हैं।

किचेन गार्डेन से लाभ ही लाभ

जीविकोपार्जन की नई पद्धतियों में से एक है किचेन गार्डेन। खुद के घर में सब्जियों और फलों का उत्पादन और उसका उपयोग स्वास्थ्य एवं पोषण की दृष्टि से फायदेमंद तो है ही आर्थिक लाभ का एक महत्वपूर्ण रास्ता भी है। जीविका दीदियों ने किचेन गार्डेन को अपनाकर अपनी आमदनी को दो से तीन गुना बढ़ा लिया है। अपने घर के आगे, आंगन में या फिर घर के पिछवाड़े में सब्जियों और फलों की हो रही खेती को किचन गार्डन या गृह वाटिका कहते हैं। जीविका किचेन गार्डेन को अपने समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघों के माध्यम से बढ़ावा दे रही है। इसका उद्देश्य लोगों को उनके घरों में ही शुद्ध एवं पौष्टिक सब्जियां और फलों की उपलब्धता सुनिश्चित करना एवं खुद के उपयोग के बाद इसकी बिक्री से होने वाले लाभ से उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार लाना है। जीविका से जुड़ी महिलाएं खुद के घर में खेती योग्य भूमि पर किचेन गार्डेन के तहत सब्जियों एवं फलों का उत्पादन कर रही हैं। यही कारण है कि उन्हें अब सब्जी और फल की खरीददारी के लिए बाज़ार की ओर रुख नहीं करना पड़ रहा है। जीविका दीदियाँ घर के चारों तरफ खाली पड़ी भूमि में छोटी–छोटी क्यारियाँ बना कर फसल चक्र को अपनाते फल–फूल एवं साग–सब्जी का उत्पादन कर रही हैं।

इस गतिविधि से दीदियां अपने परिवार के लिए शुद्ध, ताज़ा एवं स्वादिष्ट साग–सब्जियों की खेती सालों भर कर रही हैं। पपीता, अमरुद, केला, लत्तर वाली सब्जियां और विशेष तौर पर साग उपजा रही हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि किचेन गार्डेन में उगाए जाने वाले फलों एवं सब्जियों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए जहरीली दवाइयां और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। लिहाजा किचन गार्डन में उपजाई गई सब्जियों और फलों में नकली रंग, रसायनों एवं उन संक्रामक रोगों के जीवाणुओं की उपस्थिति का भय नहीं रहता जो बाजार से खरीदी गयी सब्जियों और फलों में अक्सर देखने को मिलता है। ऐसे में परिवार को पौष्टिक, शुद्ध एवं ताज़ी सब्जियां एवं फल मिलता है। पौष्टिक, शुद्ध एवं ताज़ा फल एवं सब्जियां गर्भवती एवं धात्री महिलाओं में विटामिन ई की कमी को भी पूरा करते हैं। किचेन गार्डेन को बढ़ावा देने हेतु जीविका लगातार क्रियाशील है। जीविका दीदियों को समय–समय पर प्रशिक्षित भी किया जाता है। एमआरपी, सीएनआरपी, वीआरपी, जीविकोपार्जन विशेषज्ञ एवं प्रबंधक–फ़ार्म, प्रबंधक–सामाजिक विकास एवं प्रबंधक–स्वास्थ्य एवं पोषण तकनीकी रूप से सहयोग प्रदान करते हैं। फसल चक्र के तहत बीज खरीददारी के साथ–साथ बुआई की तकनीक भी सिखाई जाती है। तकनीक, प्रशिक्षण एवं सहयोग का प्रतिफल है कि जीविका दीदियाँ किचेन गार्डेन को अपनाकर स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन के साथ ही आर्थिक रूप से सशक्त भी हो रही हैं। खुद के द्वारा उत्पादित फल एवं साग–सब्जियों के उपयोग के बाद बचे हुए उत्पाद को बेचकर मुनाफा भी कमा रही हैं। जीविका दीदियों को किचेन गार्डेन से लाभ ही लाभ हो रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णियाँ
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर